om-11 INITIAL_Page 1 and 2 12-08-2014 11:59 Page 6

आनंद का दूसरा नाम श्रीकृष्ण

जैसे चाँद की चाँदनी की कीमत चकोर को, स्वाति नक्षत्र के बूंद की कीमत एक सीप को होती है वैसे ही हमारे और आप सबके ज़हन में एक बहुमूल्य, बेशकीमती अति प्यारा, अति दुलारा, एक ऐसे जन्नती इन्सान की भी कीमत है, जिसे हर कोई छूना चाहता है, प्यार करना चाहता है, उसे पुचकारना चाहता है। सभी उसके एक दर्शन के दर्शनाभिलाषी होते हैं, उस अहम पाकीज़गी वाले जन्नती इन्सान का नाम श्रीकृष्ण है।

एक मौलवी साहब से पूछा गया कि आप आयतें पढ़ते हैं, उन आयतों में आप हमेशा इल्म और शैतानी आदतों से अलग रहने की बात करते हैं। क्या आप उस इन्सान को एक मुकम्मल नाम दे सकते है? तो मौलवी साहब का जवाब था, जनाब वह जन्नती खूबियों वाला इन्सान फरिश्ता ही हो सकता है, और तो कोई हो नहीं सकता।

सभी धर्मों ने अपने-अपने आदर्श बनाए हुए हैं। आदर्श उसे कहते हैं जिसमें हम अपना दर्शन कर सकते हैं, वैसे भी दर्शन शब्द 'दृष' धातु से निकला है, जिसका अर्थ है देखना। वे खूबियाँ जिनमें नज़र नहीं आती उसे आम इन्सान, जिसमें थोड़ी बहुत नज़र आती है उसे खास इन्सान और जिनमें थोड़ी दिव्यता जुड़ जाती है उसे जन्नती इन्सान की संज्ञा दी जाती है।

उपरोक्त दिव्य नामों में एक नाम 'कृष्ण' का है। कृष्ण शब्द अपने आप में सम्पूर्ण है जो 'कृष' धातु से निकला है, जिसका अर्थ है आकर्षित करना। अब आकर्षित कौन करता है, जो या तो बहुत चमकदार हो या गुणवान हो या हुनरमंद इन्सान हो। लेकिन वो आकर्षण दर्शनीय होता है, सुखकारी होता है, बस देखने का ही मन करता है। पर बड़ी विकट परिस्थिति ये है कि सभी लोग आकर्षित होते हैं, आकर्षित करने वाला बनने की हिम्मत नहीं रखते।

भाद्रपद मास के अष्टमी को एक दिव्यात्मा का जन्म जगजाहिर है। अब प्रश्न उठता है कि वह इसी मास में क्यों पैदा होता है? वसंत ऋतु का पूरा होना और उसके कुछ मास के बाद कृष्ण का जन्म होना, इसका कोई मनोवैज्ञानिक सरोकार हो सकता है! जैसे ही हम आनंद की अवस्था में होते हैं और वो जब बिल्कुल चरम पर होती है, तो सभी हमसे आकर्षित होने लग जाते हैं, लेकिन कृष्ण के जन्म से पहले बहुत सारी बातों का सामना करना पड़ता है, ऐसा शास्त्रगत उल्लेख है। मनोवैज्ञानिक मान्यता के आधार से अगर हम देखें तो हिन्दी मास चैत से लेकर आषाढ़ तक भीषण गर्मी तथा उमस वाला होता है, उसके बाद की ठण्डक हमें सुकून प्रदान करती है। वैसे ही हम सभी को गर्मी व उमस अर्थात् अति विकट परिस्थितियों को सहन कर उस अवस्था तक पहुँचना होता है। सहन करते-करते जब हम सहनशील बन जाते हैं, उसका स्वरूप बन जाते हैं तब हम उस आनंद की स्थिति को प्राप्त करते हैं। आनंद की तरंगें हमसे जहाँ भी जाती हैं, उससे सभी आनंदित महसूस करते हैं और कहने लग जाते हैं कि आप ही हमारे इष्ट हैं, आप ही फरिश्ते हैं क्योंकि आप आनंदित हैं।

इसका अर्थ यह हुआ कि कृष्ण का जन्म आनंद का दूसरा नाम है। इसलिए कृष्ण के जन्म के समय बारिश, आंधी, तूफान, बिजली को कड़कते हुए दिखाया गया है, परंतु उसमें भी वो मुस्कुराता है। आप सभी ने धारावाहिकों में ये दृश्य तो देखा ही होगा जिसमें उनके पांव के स्पर्श व चुम्बन मात्र से प्रकृति का जल तत्व बिल्कुल शांत व शीतल हो जाता है। स्वयं शेषनाग, जिनके लिए कहा जाता है कि उन्होंने धरती को अपने सिर पर उठाया है ऐसी मान्यता है, ने स्वयं उनकी रक्षा की। अब यहाँ धरती से जुड़ने का मतलब है कि देह का अभिमान उसने अपने सिर पर उठा रखा था, अर्थात् काम विकार को जीत लेने के बाद वही शुभकामना के रूप में रक्षा-कवच बन हमारी रक्षा करने लग जाता है। बिजली के कड़कने का अर्थ, अग्नि तत्व शांत होने से पहले और तेज़ प्रहार करता है अर्थात् भभकता है, लेकिन बाद में वही अग्नि तत्व शांत होकर उस अंधेरी रात में रोशनी दिखाने का काम करता है। पवन देव अर्थात् वायु तत्व हमारे गति को बढ़ा देता है और आराम से हमारे कदम गोकुल (गो अर्थात् स्वर्ग) और (कुल अर्थात् घराना) में पहुँच जाते हैं, अर्थात् हम सारे स्वर्ग अर्थात् स्व के सार में पहुँच जाते हैं और आनंद की चरम् अवस्था को प्राप्त करते हैं। उसी का मिसाल है कि कृष्ण चैन की बांसुरी बजाने लग जाते हैं।

कृष्ण हम सभी की एक मानसिक उपज है। यदि हम सभी को आकर्षित करने वाला बनना है तो हमें भी तपना और जलना होगा, सहन करना होगा उन सभी परिस्थितियों को जो आती हैं और आने वाली हैं। आपका उपहास होगा, लोग हसेंगे, कलंक लगायेंगे, परन्तु यदि चमकदार बनना है तो घिसना ही होगा, मरना ही होगा उन सभी बातों से जो हमें अपनी तरफ सकारात्मक या नकारात्मक तरीके से खींचती हैं। आप बस करीब हैं और यदि और करीब जाना चाहते हैं उस जन्नती इन्सान के तो थोड़ा सा और प्रयास करिये, और वो प्रयास ऐसा हो जो आपको स्वर्ग का प्रवासी बना दे.....तभी सच्ची-सच्ची आप कृष्ण जन्माष्टमी मना पायेंगे।

'मैं' को विसर्जित करें, शांति मिलेगी

क्या आप जानते हैं कि कुछ लोग आपको क्रोध में डुबो देने के प्रयास में लगे रहते हैं। यह घटना घर और बाहर दोनों में घटती है। आपके व्यावसायिक स्थल पर लोग आपको इरीटेट करें यह सामान्य बात है, लेकिन ऐसी घटनाएं घरों में भी होने लगती हैं। आपके परिवार के सदस्य आपको गुस्सा करने के लिए उकसाते हैं। सावधान रहिए, दूसरों के द्वारा संचालित और प्रेरित क्रोध अपने ऊपर न आने दीजिए, क्योंकि यह आपके व्यक्तित्व को असंतुलित कर जाता है। सामने वाले इसका फायदा उठाते हैं, क्योंकि वे जानते हैं कि जब तक आप मजबूत हैं आपको पराजित नहीं किया जा सकता, लेकिन जैसे ही आप गुस्से में आए कि आप उनको फायदा पहुंचाना शुरु कर रहे होते हैं। आपको लड़खड़ाता देखकर उनको आगे निकलने का मौका मिल जाएगा। पहली बात तो यह है कि गुस्सा करिए ही मत और यदि क्रोध आ ही जाए, तो कोशिश करें कि उसे प्रत्यक्ष रूप से प्रकट न करें, हालांकि दबाने में नुकसान है। पर कभी-कभी दर्शाने में ज़्यादा हानि होती है। लोग आपको उकसाने का काम करते ही रहेंगे और इसीलिए आज अधिकांश लोग अशांति के प्लेटफॉर्म से ही काम करते हैं। शांति से काम करने वाले कम लोग हैं। बाहर तो शोर होता ही है पर अशांति के कारण भीतर भी भारी उपद्रव चलने लगता है। क्रोध की शुरुआत होती है 'मैं' से। जब भी कोई काम करें 'मैं' को विसर्जित करें और परमशक्ति से जुड़ जाएं। परमात्मा से कहें, 'आप करा रहे हैं तो मैं कर रहा हूँ।' बस, यहीं से 'मैं' गिरेगा और आप क्रोध से बचते हुए पूर्ण शांति के साथ काम कर पाएंगे।

नैनीताल। डी.एम. अक्षत गुप्ता को रक्षासूत्र बांधते हुए ब्र.कु. वीणा।

नागपुर। केन्द्रीय सड़क परिवहन एवं राजमार्ग मंत्री नितिन गडकरी को रक्षासूत्र बांधते हुए ब्र.कु. रजनी ।

राँची। मुख्यमंत्री हेमंत सोरेन को रक्षासूत्र बांधते हुए ब्र.कु. निर्मला।

देहरादून। उत्तराखण्ड के मुख्यमंत्री हरीश रावत को राखी बांधते हुए ब्र.कु.मंजु।

दिल्ली-पाण्डव भवन। ब्रिगेडियर निश्चय राउत को रक्षासूत्र बांधते हुए ब्र.कु. पुष्पा।

कोटा। कलेक्टर जोगाराम को राखी बांधने के पश्चात् आत्म स्मृति का तिलक लगाते हुए ब्र.कु. ज्योति।

दार्जिलिंग। विधायक त्रिलोकचंद देवान को राखी बांधते हुए ब्र.कु. मुना। साथ हैं ब्र.कु. कविता।